शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# अटल जी की कविता में समाहित एकात्म के स्वर

छत्रवीर सिंह राठौर
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*मानवता, सहृदयता और उदारता की उच्च भावभूमि पर सर्जना के रससिक्त सुमधुर स्वरों को प्रस्त्रवित करने वाले भारतीय राजनैतिक क्षितिज के शिखर पुरूष वरदायिनी मां सरस्वती के वरदयुग तथा भारतभूमि के पूर्व प्रधानमंत्री पं अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व में कवि और राजनेता के गुणों का अद्भुत समन्वय है। उनमें एकात्म संस्कार समुन्नत रूप में विद्यमान है। उनमें जनचेतना के प्रति अतुलित प्रेम का सागर हिलोरे ले रहा है। यही कारण है कि वे जाति, धर्म, सम्प्रदाय की संकीर्ण सीमाओं में बंधे हुए नहीं है वरन् वासुधैव कुटुम्बकम के प्रति उनमें पूर्ण आस्था है। इसलिए उनका चिंतन एकात्मवादी है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी कविताओं में एकात्म चिंतन का विश्लेषण किया गया है।*

## प्रस्तावना

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी कविता- 'मै सोचने लगता हूँ में लिखा है -

"पुरखे सोचने के लिए आँखे बन्द करते थे 1
मै आँखे बंद होने पर सोचता हूँ 2

बोलते क्षण अधमुंदी आँखे, अधमुंदी आँखों में खुला-खुला चिन्तन, और इसके साथ-साथ हवा में लहराते हुए फ्लम्ब हाथ, हाथों की वज्र-मुट्ठियाँ, वज्र मुटिठयों में देश के लिए कुछ कर गुजरने के सपने और सपनों के क्षितिज से झांकता हुआ एक दिव्य और भव्य पुरूष का नाम है पं. अटल बिहारी वाजपेयी। जिन्हें प्रत्येक देशवासी न केवल दिल्ली के सिंहासन पर अपितु अपने दिल के सिहांसन पर बैठा पाता है। वाजपेयी जी की पहचान कोई पूर्व प्रधानमंत्री के सिंहासन से न करे। उनकी पहचान के लिए उनके हृदय को देखे, हृदय की भावनाओं को पढ़े उनकी कविताओं को पढे और उनके भाषणों को आत्मसात करे। अटल जी की सच्ची पहचान के लिए उनके राजनीतिक आसन को नही अपितु कवि के हृदयासन को देखना होगा। वाजपेयी राजनेता हों चाहे कवि हों दोनों से ऋग्वेद की भाषा में यह कह रहा होता है - तदैव साध्यताम् तदैव साध्यताम अर्थात् केवल राष्ट्रभक्ति की साधना करो केवल राष्ट्रभक्ति की, चाह वे संसद भवन में बैठे हों चाहे कवि के साधना भवन में देश प्रेम की भावना में सदैव डूबे रहते थे।

"इससे फर्क नही पड़ता
कि आदमी कहाँ खड़ा है ?
पथ पर या रथ पर ?
तीर पर या प्राचीर पर ?
फर्क इससे पड़ता है कि जहां खड़ा है
या जहां उसे खड़ा होना पड़ा है
उसका धरातल क्या है ? 3

## अटल जी की काव्य यात्रा

अटल जी के प्रधानमंत्री के सिंहासन से ऊँचा तो उनका कविता का सिंहासन है कविता के आंगन में उन्होने अपनी प्रतिभा के बीज बोये हैं। जब

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वाजपेयी जी काव्यकृति 'मेरी इक्यावन कविताएँ' पढ़ी तो ज्ञात हुआ कि जो शीर्ष राजनेता है वह एक शीर्ष काव्य नेता भी है। कवि की कृति 'मेरी इक्यावन कविताएँ' उस समय प्रकाशित हुई हैं जब देश अपनी आजादी की स्वर्ण जयंती मनाकर इक्यावनवें वर्ष में प्रवेश कर रहा था। आजादी के इक्यावनवें वर्ष और अटल जी की इन्क्यावन संज्ञक संख्या-मूलक साम्य ही नहीं है। इस साम्य के भीतर मुझे गहरी व्यंजना भी दिखलायी पड़ती है। मुझे ऐसा लगा कि जैसे आजादी का पुजारी भारतमाता की आजादी की एक-एक वर्षगाँठ पर अपने मन की एक-एक गाँठ को खोलता चला गया हैं। कवि की यह काव्य यात्रा पराग बनकर मृतों में जीवन और जीवितों में ज्वाला भरने का काम कर रही है। उनकी यह कविताएँ एक कालजयी कवि की कविताएँ है, जिन्हें काल भी कभी नहीं मिटा पायेगा। अटल जी के शब्दों में -

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी?
अन्तर को चीर व्यथा, पलकों पर ठिठकी।
हार नहीं मानूंगा,
रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पर, लिखता मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ। 4

एकात्म की गंगोत्री वेदों में मिलती है। वेदो से निकलकर यह गंगा उपनिषदों, आरण्यकों ब्राह्मण ग्रंथों से होती हुई पुराणों को पार करके प्रवाहित हो रही है। एकात्म की सबसे ऊंची तरंग का नाम पं. अटल बिहारी वाजपेयी है। एकात्म उनके यहाँ राष्ट्रवाद का पर्याय बन गया है।

अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा अपने भाषणों एवं लेखो में चाहे उनकी इक्यावन कवितायें हो चाहें समय-समय पर दिये गये उनके भाषण हों या पुस्तकों में संग्रहीत लेख हों, उनमें हमें सर्वत्र एकात्म में स्नात भाव लोक के दर्शन होंगे। उनके साहित्य में जड़ चेतन शत्रु-मित्र जैसे एक ही चेतना के अधिष्ठान बिन्दु बन गए हैं। जब वे पाकिस्तान को संबोधित करत हुऐ कहते हैं :

भारत पाकिस्तान पड़ोसी संग-संग रहना है।
प्यार करें या वार करें दोनों को ही सहना है।5

यह एक तपस्वी राजनेता और आज के विराट राजनेताओं से पृथक एक तपोपूत भारत के सपूत की वाणी है। जिसमें निर्भीकता के साथ वेद से अनुस्यूत संगच्छध्वम संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम अथवा जिसे भोजन मंत्र के रूप में भारत वासी सदियों से बोलते आए हैं :

सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।6

यह हमारे कवि अटल जी की कविता में समाहित होकर हमारे समय की पवित्र ऋचा बन गई है। हमारे पड़ोसी की जड़ी भूत चेतना में निश्चित ही ये पंक्तियाँ सुगबुगाहट पैदा करेंगी और एकता से रहने की प्रेरणा देंगी। आंतक की छाया में जीवन जी रही दुनिया को कुछ प्रकाश दे जाएंगी। पं. वाजपेयी का सम्पूर्ण जीवन ही एकात्म दर्शन को समर्पित रहा है। 'कदम मिलाकर चलना होगा' कविता अविस्मरणीय है। उनकी कविता देश के लोगों को एक होकर एक साथ चलने की प्रेरणा देती है।

कुश काटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वज्रिचत यौवन,
नीरवता से मुखरित यौवन,
पर हित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में
जलना होगा- गलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा।।7

पं. अटल बिहारी वाजपेयी का राष्ट्रवाद केवल भारत के लोगों का राष्ट्रवाद नहीं है विश्व

मानवता का राष्ट्रवाद है। इसमें विश्व के लोगों को साथ-साथ चलने की प्रेरणा है।

युद्ध सदैव मानवता को दो शिविरों में बांटता है। युद्ध एकात्म का शत्रु है, विभेद का जनक है। वैषम्य और घृणा का सहोदर है। कोई एकता का पुजारी युद्ध नही चाहेगा।

हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,
मुंह में शान्ति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफन बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है, उनका असली चेहरा,
कामयाब हो उनकी चालें ढंग न होने देंगे
जंग न होने देंगे, जंग न होने देंगे।।8

अटल बिहारी वाजपेयी का हृदय सहानुभूति के कणों से सजा हुआ है। संसार के प्राणिमात्र को अपना कहने का साहस केवल भारत की संस्कृति के पास है। यह भारतीय संस्कृति के हृदय की विशालता है। हृदय की इस विशालता के कारण भारत ने अपना सर्वस्व दुनिया को लुटा दिया, लेकिन फिर भी उसका कोश भरा का भरा रहा है। बड़ी दम खम के साथ अटल जी ने अपनी इस राष्ट्रीय विशेषता को अपनी कविता में संजोया है। अटल जी का भारत अटल जी की कविता में जैसे सजीव होकर बोल रहा है।

मैने छाती का लहू पिला पाले विदेश के क्षुधित लाल।
मुझको मानव में भेद नहीं, मेरा अन्तस्थल वर विशाल।
जग के ठुकराये लोगों को, लो मेरे घर का खुला द्वार।
अपना सब कुछ यूँ लुटा चुका, फिर भी अक्षय है धनागार।।9

अटल जी का चिन्तन, केवल अपनी संस्कृति की महत्ता के स्तवन तक ही नहीं रूका है वे लोग जो धर्म और धर्मस्थलों के नाम पर नरसंहार करते हैं, मंदिरों, मूर्तियों को तोड़ते हैं और उसे अपनी विजय गाथा कहते हैं, किन्तु सच्ची विजय तो दिलों को जीतने की विजय होती है। देशों के जीतने को विजय नहीं कहते हैं वे उन्मादी जो सीमा पार से आकर हमारे देश में आतंक फैलाते हैं, देश के भू-भाग पर अधिकार करने की सोचते हैं वे मानव एकात्म के घोर शत्रु हैं। इस सबके बावजूद सारे अत्याचारों को चुपचाप सहन करता हुआ मानव एकात्म के मार्ग से भारत आज भी पीछे नही हटा है और न ही कभी हटा था।

मानवीय एकता भारत का प्राण तत्व है उसी बात को पं. अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी भास्वर वांणी में इस प्रकार कहा है-

कोई बतलाए काबुल में जाकर कितनी मस्जिद तोड़ी।
भू-भाग नहीं शत-शत मानव के हृदय जीतने का निष्चय।।10

किन्तु यह सत्य है कि जब-जब मनुष्य की मूल वृत्तियाँ उसके मन और बुद्धि पर प्रभावी हुई हैं मनुष्य अपने एकात्म राग को भूल बैठा है और वैषम्य के मार्ग पर चल पड़ा है। जैसे मानव के भीतर दानवी क्षुधा जाग उठी है। और मानवीय एकता का स्वार्णिम स्वपन एक स्वप्न बनकर रह गया है। पं. अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने देश के चित्रपट पर भारत के एकात्म का उदात्त चित्र खींचते हुए स्थान-स्थान पर अपनी कविता में अपने इसी राष्ट्रीय गौरव को पिरोया है। एक उदाहरण देखिए-

जब पश्चिम ने वन फल खाकर, छाल पहनकर लाज बचाई।
तब भारत से साम गान का स्वर्गिक स्वर था दिया सुनाई।
अज्ञानी मानव को हमने, दिव्य ज्ञान का दान दिया था।

अम्बर के ललाट को चूमा, अतल सिंधु को छान लिया था।।11

आज भी तमाम राक्षसी प्रवृत्तियों के पागलपन के बावजूद मानव विभेदक अनेक अमानवीय शक्तियों के होते हुए भी भारत की एकात्म का मूल स्वर मूक नही हुआ है। पं वाजपेयी के शब्दों में-

केशव के आजीवन तप की यह पवित्रतम धारा।
साठ सहस ही नही, तरेगा इससे भारत सारा।
यह नव गंगा तोड़ चली है, बाधाओं की कारा।
एक जह्नु क्या ? यहाँ पूर्ण पशुबल ने सिर दे मारा।।12

जब-जब मानव समाज, पशुता के अंधकार में डूबेगा मानव अपने मानवीय अनुष्ठानों को भूलकर मानव विरोधी आचरणों में सलंग्न होगा तब-तब पं. अटल बिहारी वाजपेयी का एक-एक गीत एकात्म की गीता बनकर उद्भ्रान्त मानव को उसकी दिशा का बोध कराता रहेगा और कवि रचित गीता की यह वाणी जन-जन कल्याणी बनकर संसार को उसकी एक अमूल्य धरोहर बनकर मार्गदर्शन करती रहेगी। स्वयं कवि के शब्दों में-

गूँज उठी गीता की वाणीं,
मंगलमय जन-जन कल्याणी।
अपढ़ अजान विश्व ने पायी,
शीष झुकाकर एक धरोहर।।13

## निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक राजनेता ही नहीं बल्कि कवि हृदय सम्राट भी हैं। उन्होंने कविता के माध्यम से देशप्रेम और एकात्म का जो संदेश जन-मानस तक पहुंचाया है वह पराग बनकर जीवितों में ज्वाला बनकर दहकती रहेगी।

## संदर्भ ग्रंथ

1. *मेरी इक्यावन कवितायें, शीर्षक - मैं सोचने लगता हूँ*
2. *मेरी इक्यावन कवितायें, - शीर्षक - पहचान*
3. *श्री अटल बिहारी वाजपेयी - मेरी इक्यावन कवितायें,*
4. *श्री अटल बिहारी वाजपेयी - कुछ लेख कुछ भाषायें*
5. *डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा - बिंदुबिंदु विचार*
6. *ऋग्वेद 10/191/2*
7. *श्री अटल बिहारी वाजपेयी - राजनीति की पथरीली राहें*
8. *मेरी इक्यावन कवितायें,*
9. *वही*
10. *वही*
11. *वही*
12. *वही*
13. *वही*